

श्री हनुमान चालीसा पाठ Hanuman Chalisa



हनुमान चालीसा पाठ

(Hanuman Chalisa Lyrics)

PDF Hindi



॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि । ।

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार । ।

HindiReadDuniya.com

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुं लोक उजागर । ।
रामदूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा । ।
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी । ।
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुंडल कुंचित केसा । ।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
कांधे मूंज जनेऊ साजै । ।
संकर सुवन केसरीनंदन ।
तेज प्रताप महा जग बन्दन । ।
विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर । ।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया । ।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा । ।
भीम रूप धरि असुर संहारे ।
रामचंद्र के काज संवारे । ।

॥ चौपाई ॥

लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये । ।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई । ।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं । ।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा । ।
जम कुबेर दिगपाल जहां ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहां ते । ।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा । ।
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना । ।
जुग सहस्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू । ।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लांघि गये अचरज नाहीं । ।
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते । ।

॥ चौपाई ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे । ।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रक्षक काहू को डर ना । ।
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हांक तें कांपै । ।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै । ।
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा । ।
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै । ।
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा । ।
और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै । ।
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा । ।
साधु-संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे । ।

॥ चौपाई ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता । ।
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा । ।
तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम-जनम के दुख बिसरावै । ।
अन्तकाल रघुबर पुर जाई ।
जहां जन्म हरि-भक्त कहाई । ।
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई । ।
संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा । ।
जै जै जै हनुमान गोसाई ।
कृपा करहु गुरुदेव की नाई । ।
जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई । ।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा । ।
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय मंह डेरा । ।

॥ दोहा ॥

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप । ।